चिरुजीवो साई अमां शील सिंधु प्यारा। रग रग चवे थी जीओ जीअ जा जियारा।।

करुणा जा सागर महरबान मिठिड़ा, सन्तिन श्रोमणि साहिब सुठिड़ा। सिय रघुवर जा नेही नामियारा।।

जानिब तवहां जसजी सिरता वहे थी, खेतिड़ा भक्ति जा सींचींदी रहे थी। ऊंचिड़ो अनन्य वृतु धारण वारा।।

सुधा सिरसाए तवहां जी कथा किलकारी, दिलिड़ी थी ठारे दया दीन हितिकारी। श्रद्धा भक्ति जा खोलिया भण्डारा।।

अलखु अयोनी जिहं खे वेदिन पुकारियो, नींह जे नेणिन सां सो नाथ तो देखारियो। महिमा महान तवहां जी मधुरता आगारा।।

सियाराम श्यामाश्याम प्रेम जा प्याला, बिना मुल्ह पियारिया सदां बख्राबाला। मैगसिचन्द्र मालिक जा जग़ जैकारा।।